

# SHRI MANOJ BAJPAYEE

Shri Manoj Bajpayee is an Indian film Actor who predominantly works in Hindi cinema and has also worked in films in other languages. He is often regarded as a method actor and is known for his unconventional, versatile roles and has till date worked in more than 60 films. Shri Bajpayee's hard work and dedication to achieve his childhood dream has made him a role model for many young aspirants who belong to small and remote towns of India.

2. Born on March 18, 1964 in Belwa, a small village near the town Narkatiaganj, West Champaran, Bihar, Shri Bajpayee did his basic schooling in his village and completed his 12th Class- from Maharani Janaki College in Bettiah. Since childhood, Shri Bajpayee dreamt of becoming an actor. To pursue his dream, he relocated to Delhi at the age of seventeen and applied for the National School of Drama, only to be rejected three times. Despite that he didn't lose hope and continued to perform as a theatre actor in Delhi and also completed his graduation from the Ramjas College, Delhi University. Shri Bajpayee, with his lively performances, became one of the most popular artists in the Delhi Theatre circles. Following up on his successful stint as a theatre actor, Shri Bajpayee re-applied at the National School of Drama for the fourth time, and was offered the teaching position at the school instead.

3. Shri Bajpayee made his feature film debut with a role of a dacoit in Shekhar Kapur's Bandit Queen (1994). Soon after his debut film, he shifted to Mumbai in early days of his career, he was a struggling actor until director Mahesh Bhatt offered him the soap opera Swabhimaan (1995). Later, he was part of Mahesh Bhatt's films such as Dastak (1996) and Tamanna (1997). Film director, Shri Ram Gopal Varma casted him in a prominent role in his film Satya (1998), a crime drama where he essayed the role of a gangster "Bhiku Mhatre" and his performance in Satya is considered to be one of the most memorable characters of Hindi cinema. Shri Bajpayee won the National Film Award for Best Supporting Actor and filmfare Critics Award for Best Actor. Filmfare later included Shri Bajpayee's performance from the film Satya in the 2010 issue of Bollywood's "Top 80 Iconic Performances". He went on to do many critically acclaimed films such as Shool, Kaun, Aks, Pinjar, 1971 Prisoners of War, Rajneeti and many more where his performance has been widely appreciated. In 2012, Shri Bajpayee appeared in Anurag Kashyap's film Gangs of Wasseypur, The film was premiered at the 2012 Cannes Film Festival, Toronto film festival, and the Sundance Film Festival in 2013.

5. Shri Bajpayee, by virtue of his versatile performances, has not only received major honors and award, in India but has also been conferred with international awards. He won National Film Awards in the Best Supporting Actor category & Best Actor category for films Satya [1999] and Pinjar [2003] respectively. He has also received three Filmfare awards for his performance in films Satya, Shool and Aligarh. He won two Best Actor Screen Awards for his performance in Satya and Aks. Shri Bajpayee has also bagged International awards in the Best Actor category at the Asia Pacific Screen Awards 2016 for the film "Aligarh" & Best Actor award at the New York Indian Film Festival and Indian Film Festival of Melbourne for the film Gali Guleiyan.

पद्म श्री



# श्री मनोज बाजपेयी

श्री मनोज बाजपेयी भारतीय फिल्म अभिनेता हैं, जो मुख्य रूप से हिंदी सिनेमा में अभिनय करते हैं और वे अन्य भाषाओं की फिल्मों में भी काम कर चुके हैं। आपको प्राय: सलीका पसंद अभिनेता के साथ-साथ अपरंपरागत तथा बहुमुखी भूमिकाओं के लिए भी जाना जाता है। आपने अब तक 60 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है। अपने बचपन के सपने को मूर्तरूप देने के लिए अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण की वजह से आप भारत के छोटे और दूरदराज के शहरों से ताल्लुक रखने वाले अनेक महत्वाकांक्षी युवाओं के लिए एक आदर्श बन गए हैं।

2. आपका जन्म 18 मार्च, 1964 को नरकटियागंज कस्बे के समीप एक छोटे से गांव,पश्चिम चम्पारण बिहार में हुआ। आपने अपने गांव में ही अपनी प्राथमिक स्कूली शिक्षा पूरी की और 12वीं की परीक्षा महारानी जानकी कॉलेज, बेतियाह से उत्तीर्ण की। बचपन से ही आप का सपना अभिनेता बनने का था। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए आप सत्रह वर्ष की आयु में दिल्ली चले आए और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में दाखिले के लिए तीन बार आवेदन किया लेकिन आपको इसमें दाखिला नहीं मिला। इसके बावजूद आपने हिम्मत नहीं हारी और आप दिल्ली में रंगमंच अभिनेता के रूप में अभिनय करते रहे और इसके साथ-साथ आपने रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। अपने जीवंत अभिनय के कारण दिल्ली रंगमंच के गलियारों में आपकी गिनती सबसे अधिक लोकप्रिय कलाकारों में होने लगी। रंगमंच अभिनेता के रूप में अपनी सफलता के बाद आपने चौथी बार नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में दाखिले के लिए फिर से आवेदन किया और आपको स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्य करने का ऑफर मिला।

3. श्री वाजपेयी ने शेखर कपूर की बैंडिट क्वीन (1994) में डाकू की भूमिका के साथ फीचर फिल्मों में अभिनय की शुरुआत की। इसके बाद आप मुम्बई चले आए।अपने करियर के शुरुआती दिनों में आपको काफी संघर्ष करना पड़ा और फिर आपको फिल्म निर्देशक महेश भट्ट ने सोप ओपेरा 'स्वाभिमान' (1995) में अभिनय का मौका दिया।इसके बाद आपने महेश भट्ट की दस्तक (1996) और तमन्ना (1997) जैसी फिल्मों में अभिनय किया। फिल्म निर्देशक, श्री राम गोपाल वर्मा ने आपको अपनी फिल्म सत्या (1998) में प्रमुख भूमिका सौंपी जो आपराधिक पृष्ठभूमि की फिल्म थी और उसमें आपने गैंगस्टर "भिकू म्हात्रे" का किरदार निभाया। फिल्म सत्या में आपके किरदार को हिंदी सिनेमा के सबसे यादगार किरदारों में माना जाता है। आपको सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के रूप में फिल्मफेयर क्रिटिक्स पुरस्कार मिले। इसके बाद बॉलीवुड "टॉप 80 आइकॉनिक परफोरमेंसेस" नाम से 2010 में प्रकाशित फिल्मफेयर के अंक में सत्या फिल्म में आपके यादगार अभिनय को भी स्थान दिया गया। आपने शूल, कौन, अक्स, पिंजर, 1971 प्रिजनर्स ऑफ वॉर, राजनीति तथा ऐसी ही अन्य महत्वपूर्ण फिल्मों में भी कार्य किया। इन फिल्मों में आपके अभिनय को बहुत सराहना मिली।वर्ष 2012 में आपने अनुराग कश्यप की फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर में अभिनय किया। इस फिल्म का प्रीमियर वर्ष 2012 केन्स फिल्म फेस्टिवल, टोरंटो फिल्म फेस्टिवल और वर्ष 2013 में सनडान्स फिल्म फेस्टिवल में दिखाया गया।

4. अपने बहुमुखी अभिनय के लिए आपको केवल भारत में ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनेक सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। आपको फिल्म सत्या (1999) के लिए सहायक अभिनेता श्रेणी में तथा फिल्म पिंजर (2003) के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता श्रेणी में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया। आपको सत्या, शूल और अलीगढ़ फिल्मों में अपने अभिनय के लिए तीन फिल्मफेयर अवॉर्ड मिले। फिल्म सत्या और अक्स में आपके अभिनय के लिए दो बेस्ट एक्टर स्क्रीन अवॉर्ड्स प्राप्त हुए। आपको फिल्म "अलीगढ़" के लिए एशिया पेसेफिक स्क्रीन अवॉर्ड्स, 2016 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता श्रेणी में अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ और फिल्म गली गुलियां के लिए न्यूयॉर्क इंडियन फिल्म फेस्टिवल और इण्डियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।